प्रफुल्ल कोलख्यान की कविताएँ

प्रफुल्ल कोलख्यान

धरती उर्वरा है

इसी धुआँस की कोख से
निकलेगा
नया सूरज

यह सच है कि
आकाश
जब कभी
सिकुड़ता है
सब से पहले
सरज की हत्या होती है
धरती उर्वरा है

धरती
नये आकाश को
आकार देती हुई
उछाल देती है
नया सूरज

और किरणें
नई हवा के साथ
निकल पड़ती हैं
फाग की खोयी हुई
लड़ी की खोज में

सबसे बड़ा मनोरंजन

धुँआती हुई
लकड़ी को फूँकती है

माँ धधकती है

बहते हुए आँसू
आग में पलकर
लाल लोहे की तरह
चमकते हैं
सिग्नल की जगह

मगन
नाचते हैं बच्चे
जुगनुओं के संग

फूली
नहीं समाती है रोटी

यकीनन
दुनिया के
सबसे बड़े
मनोरंजन का
नाम है रोटी

भूमंडलीकरण

हेड मास्टर की मेज पर
रखा है
एक बड़ा-सा ग्लोब

ग्लोब नाचता है
अँगुलियों के इशारे पर

पूरा-का-पूरा ग्लोब

नाचता है
रात दिन हो जाती है
दिन रात हो जाता है

कहीं कुछ नहीं होता
सिवा इसके कि
अँगुलियों के इशारे पर
पूरा-का-पूरा ग्लोब नाचता है

ग्लोब के नाचने से
मौसम कतई नहीं बदलता है
इस बात को कौन नहीं जानता है?

मँजी हुई शर्म का जनतंत्र

तेज-तेज हवा में
कविता फड़क रही है

चाँदनी की लाश पर
अँधेरों का पहरा है

मरहम से
अब काम न होगा
घाव बहुत ही गहरा है

और सं स द!!
है वह चंबल
जिसमें इस देश के
जनतंत्र का सपना
हार चुका है दंगल

ईमान है, धर्म है
जो भी है
भाषा की छलना के बाहर
प्रसाद पाने के लिए
बढ़े हुए हाथ की

मँजी हुई शर्म है।

नया लीड

आज फिर
जिंदगी को
बदलने के तरीके
उठ रहे हैं

आज फिर
मौसम
नंगा हो रहा है

आज फिर
आवाम का
दिल दहल रहा है

आज फिर
मुल्क शोक पुस्तिका में
ढल रहा है

इसके पहले कि
अखबार में
कोई नया लीड आये
मैं जल्दी-से-जल्दी
किलकते हुए
बच्चों को चूम लेना चाहता हूँ

वजन खोता आदमी

वह होकर बेकार
आ गया है
फुटपाथ पर
बजाते हुए घंटी
टिन-टिना-टिन-टिन
और चीख रहा है

--- हुजूर मुझ पर
न कीजिये यकीन
मशीन तो
झूठ नहीं बोलेगी
आपको ठीक-ठीक तौलेगी

आइये
जूतों और कपड़ों को बादकर
अपना सही वजन
जानिये हुजूर

मजबूरी और ताकत

जब लोग
अपनी मजबूरियों को
ताकत में
तब्दील करने के लिए
मिलकर कदम बढ़ाते हैं
हर बार
सत्ता और बंदूक की ताकत
मजबूरियों में
ढलती नजर आती है

रहनुमा
हर बार बताते हैं
--- पुलिस मजबूरी में ही
गोली चलाती है

मालूम कीजिये

एक आदमी
देश छोड़कर भाग गया

मालूम हुआ
बुद्धि अधिक हो गयी थी

फिर एक आदमी
देश छोड़कर भाग गया
मालूम हुआ
पैसा अधिक हो गया था

बुधना
गाँव से भाग गया

मालूम नहीं क्या हुआ था

यह उसका देश है

वह
कौन लगता है हमारा
गुदड़ी में लिपटा हुआ
हर रोज गुजरता है जो
इस गली से
कुछ-कुछ बुद-बदाता हुआ

अब गुदड़ी और
सूट के बीच
बुझारत के लिए
रिश्ते की कौन-सी
जमीन शेष है

वह कौन लगता है
हमारा आपका हम सबका

उसे किस भाषा में
बतायें कि उसे प्यार करना चाहिए
यह उसका देश है

हमारी कविता में लगभग जबरन
वह आदमी दाखिल होता है
और पूछता है कि
चीथड़े की बीमारी का

कोई शर्त्तिया इलाज है
थान के पास

पूछता है कि वह
कौन लगता है
हमारा, आपका, हम सबका,
इस देश का